National Research Journal of Human Resource Management
Volume No: 12, Issue No: 1, Year: 2025 (January-June)
PP: 183-185
ISSN: 2394-059X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.25)
Journal Website www.nrjhrm.in

नासिरा शर्मा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व

नन्दनी कुमारी

पूर्व शोध-प्रज्ञा, विश्वविद्यालय-हिन्दी-विभाग,
ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा, बिहार

सारांश:-

बदलते हुए राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, साम्प्रदायिक, सांस्कृति एवं धार्मिक यथार्थ संवेदना की लेखिका नासिरा शर्मा का जन्म जमींदार घराने के सिया मुस्लिम परिवार में 22 अगस्त 1948 को उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद में हुआ। उन्होंने फारसी भाषा और साहित्य में एम. ए. किया। हिन्दी साहित्य के इतिहास में कहानी, उपन्यास, अनुवाद एवं आलोचना आदि विभिन्न क्षेत्रों में सृजनात्मक लेखन के साथ ही स्वतंत्र पत्रकारिता में भी उल्लेखनीय कार्य किया। हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी, फारसी एवं पश्तो आदि भाषाओं में महारथ हासिल करनेवाली लेखिका नासिरा शर्मा को वर्ष 2008 में 'कुइयाँजान' उपन्यास के लिए यू. के. सम्मान, वर्ष 2016 में 'पारिजात' उपन्यास के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार एवं 2019 का व्यास सम्मान इनके उपन्यास 'कागज की नाव' के लिए प्रदान किया गया।

प्रस्तावना:-

बहुमुखी प्रतिभा के धनी, मानवतावादी विचारधारा के पक्षधर तथा महिला कथाकारों में प्रवीण, प्रखर, आनुभूतिधारिका और वरिष्ठ लेखिका नासिरा शर्मा अपने नाम के अनुरूप काम, काम के अनुरूप ईनाम और ईनाम के अनुरूप सारस्वत श्रृंगार के पथ पर अविराम अग्रसर दिख रही है। वह ईरानी समाज और राजनीति के अतिरिक्त साहित्य कला व संस्कृति विषयों की विशेषज्ञ है। ईरान, इराक, पाकिस्तान, अफगानिस्तान एवं भारत आदि जैसे देशों के राजनीतिज्ञों व प्रसिद्ध बुद्धिजीवियों के साथ उन्होंने साक्षात्कार किये, जो बहुत ही चर्चित हुए साथ ही जीवन के तमाम अनुभवों को अपनी रचनाओं के माध्यम से साहित्य-मंच पर प्रामाणिकता के साथ रखने का सराहनीय कार्य किया। बदलते समय और समाज को एक नयी दिशा देनेवाली लेखिका सीज़ते जा मानवीय मूल्यों को लेकर चिंतित हैं। इनकी रचनाओं में जीवन की सच्ची अनुभूति है, वर्तमान समाज के जीवनमूल्यों, विसंगतियों, विषमताओं एवं कटुताओं आदि के वास्तविक सक्रिय स्वरूप चित्रित है। इनकी कहानी एवं उपन्यासों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि मानवतावाद, जातिवाद, सम्प्रदायवाद, सामंतवाद अभिजात्यवाद तथा सांस्कृतिक परम्पराओं के प्रति चिंतन बहुआयामी सामाजिक परिवर्तनों के अस्तित्व कायम रखने का संदेश देती है। वे आज के यांत्रिक जीवन के मरुदेष में रिसती हुई आत्मीयता और रेत होते मानवीय रिश्तों के बीच स्नेह की बूंदों का संधान करने में अत्यंत निपुण हैं। उनके अब तक के कहानी संग्रह-पामी कागज, पत्थर गली, संगसार, इब्ने मरियम, सबीना के चालीस चोर, खुदा की वापसी, इंसानी नस्ल, दूसरा ताजमहल इत्यादि है। इनके कहानी 'वापसी', 'सरजमीन' और 'शाल्मली' के नाम से तीन टीवी सीरियल एवं 'माँ' 'तड़प', 'आया बसंत सखि', 'सेमल का दरख्त' तथा 'बावली' नामक दूरदर्शन के लिए छ: फिल्में बनी हैं। इनके उपन्यास- सातनदियाँ एक समन्दर, शाल्मी, ठीकरे की मँगनी, जिन्दा मुहावरे, अक्षयवट, कुइयाँजान, जीरो रोड, पारिजात, अजनबी जजीरा, कागज की नाव, इत्यादि है। स्त्री विमर्श पर लिखा गया आलोचना 'औरत के लिए औरत' इसमें कामगार स्त्रियों के संदर्भ में लिखी है, "वे निम्नवर्गीय तथा कामकाजी औरतों की समस्याओं पर ध्यान केंद्रित करती रहती हैं।"

आज हम भूमण्डलीकरण, वैश्वीकरण उदारीकरण और उपभोक्तावाद से कहीं आगे पूँजीवादी दौर में जी रहे हैं। पूँजीवादी व्यवस्था में स्त्री का श्रम, उसका शरीर उसकी चेतना न केवल सार्वजनिक उपभोग के लिए बनाई जाती है, बल्कि उसे व्यापार के लिए एक पण्य की तरह पैदा किया जाता है। सामंतीय व्यवस्था में स्त्री

© Copyright @ Authors

ISSN: 2394-059X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.25)
Journal Website www.nrjhrm.in

का वस्तुकरण उसके उपभोग तक सीमित था, परंतु पूँजीवादी व्यवस्था में उसका पण्यकरण उन्मुक्त उपभोग के साथ-साथ व्यापार के लिए भी किया जाता है। भूमण्डलीकरण के कारण सारी पृथ्वी एक गाँव में बदल गई है। लेकिन इसमें स्त्री का नियति किस प्रकार त्रासद हुई है, इसका गहराई से अनुसंधान होना अभी बाकी है। 'जहाँ फव्वारे लहू रोते हैं' के नाम से रिपोर्ताजों का एक संग्रह प्रकाशित हुआ है। "तुम जो इल्म की प्यास लिए घूम रही हो इसका कहीं अंत है?" इल्म की प्यास जिस दिन बुझ गई, समझो मेरा चिराग भी खामोश हो जाएगा, इस प्यास के सहारे ही तो जी रही हूँ, आज तुम ये सवाल कैसे कर बैठी?"

वास्तविक बात यह है, कि जिस दिन इल्म की प्यास बुझी, उस दिन न तो एक लेखक लेखक रह जाएगा और न एक पत्रकार-पत्रकार। इल्म की प्यास किसी भी प्रगतिशील व्यक्ति के लिए सबसे जरूरी वस्तु है। यह साहित्य सृजन की मौलिकता को न केवल बरकरार रखती है, बल्कि भूत और भविष्य के साथ अपने सरोकारों को जोड़कर देखने की जरूरत पर भी जोर देती है। "सबीना के चालीस चोर" कहानी संग्रह के संदर्भ में नासिरा शर्मा का कथन "ये कहानियाँ उन इंसानों की हैं, जो बचपन से मेरे साथ हैं। अपनी जिंदगी से मेरा रिश्ता जोड़ा और मुझे ताजा अनुभूतियों से भरी सुविधा का संसार दिया।"

'सात नदियाँ एक समुन्दर' के सम्बन्ध में श्री लाल शुक्ल के शब्दों में इसमें लेखिका ने राजनीति का अर्थ बताते हुए कहा है, "राजनीति सिर्फ पावर गेम है यहाँ राजनीति है जो किसी अच्छाई और बुराई को तय करती है सच्चाई के मुँह पर झण्डे गाड़ती है। ऐसी स्थिति में एक रचनाकार के दो रास्ते होते हैं या तो इन राजनीतियों के आगे अपनी कलम बेच दे या इसे राजनीति के प्रहार से जख्मी जिंदगियों को पर्दाकुशाई में समर्पित कर दे। "सात नदियाँ एक समुन्दर उन भयावह राजनीतिक उपन्यासों की कोटी में है, जो आपको साल्ज्नेत्सीन जॉर्ज आर्वेल, आर्थर कोएस्टलर जैसे लेखकों की याद दिलाते हैं।"

"बदलाव आएगा ऐसा विश्वास है। इंसानियत की बेड़ियां टूटेंगे, वह मुक्त होगी।" इस उपन्यास का उद्देश्य ईरानी लोगों के दुखों, संवेदनाओं के माध्यम से मानवीयता का प्रचार करना है।

अजनबी जजीरा उपन्यास- इराक की भयंकर स्थितियों में पल्लवित होता एक अनूठा मानवीय रिश्ता, घृणा और प्रेम का सघन अंतर्द्वन्द्व बारूद विध्वंस और विनाश के बीच जिंदगी की रोशनी और खुशबू को बचाने के लिए जूझती औरत की कहानी है जो पति की मौत के बाद युवा होती अपनी बेटियों के वर्तमान और भविष्य को लेकर फिक्रमंद है। विरासत में मिले धरोहर व यादों को बाजार में बेचने को मजबूर लोगों की कहानी है।

जिंदा मुहावरे- यह उपन्यास में निजाम और इमाम उन दो भाइयों की दास्तान है जो बँटवारे के चलते अलग-अलग हो जाते हैं। निजाम पाकिस्तान में बस जाता है और इमाम अपने भाई का इंतजार करता रहता है। एक वतन के टूटने की कहानी, एक परिवार के बँटने की कहानी, दो भाइयों के अलग होने की कहानी के साथ जो पीड़ा, संत्रास, दर्द, घुटन उभर कर आती है- वो इतनी सहज और वास्तविक है कि हमें प्रतीत होता है, कि ये किरदार अपने हैं, हमारे आस-पास के हैं जो हमारे साथ लगातार बात कर रहे हैं। रिश्तों के बनने-बिगड़ने की पूरी एक दास्तान है ये उपन्यास। हिन्दुस्तान-पाकिस्तान में होने वाले विकास और बढ़ती तिजारत को बेबाकी के साथ उकेरा गया है। रिश्ते खून के ही नहीं होते, रिश्ते वो होते हैं, जो दिल से बनते हैं जो मानवीय सरोकारों और भावनाओं से बनते हैं, यह संदेश दे जाती है ये उपन्यास।

जीरो रोड- यह उपन्यास इलाहाबाद पर केंद्रित है। जो इलाहाबाद शहर के एक मुहल्ले से आरंभ होकर दुबई जैसे अत्याधुनिक शहर की ओर हमें ले जाता है जहाँ सौ से ज्यादा लोगों के देष रोजी-रोटी के लिए जाते हैं। इनमें से ज्यादातर लोग ऐसे हैं, जो अपनी हालात से उखड़े हुए हैं, और अपनी जिंदगी को पटरी पर लाने के लिए जी तोड़ मेहनत करते हैं।

कागज की नाव- यह उपन्यास जीवन के रिश्तों और संबंधों की द्वंद्वात्मकता को अंतर विरोधों को बखूबी से उभारा है। इस उपन्यास में अमजद और महजहबीं के परिवार और रिश्तो-नातों के बीच बुनी हुई है। मजहबीं अमजद की पत्नी है, उसके दो बेटियाँ हैं, महलका और माजदा। अमजद का एक परिवार था जिसमें उसके

© Copyright @ Authors

ISSN: 2394-059X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.25)
Journal Website www.nrjhrm.in

माता-पिता और बड़े भाई उसके साथ थे पर मजहबीं की मानसिक बुनावट में विघटन रचा-बसा था, जिसके चलते उनका परिवार टूट गया और बड़े भाई और माता-पिता विदेश में बस जाते हैं। इसी सोच के कारण मजहबीं अपनी बेटियों के घर भी इसी तरह तोड़ने के लिए प्रयासरत रहती है, मगर उसकी बेटियाँ ऐसा नहीं होने देतीं।

"यह कैसी जिंदगी है? उसे अपनी माँ पर भी गुस्सा आ रहा था कि ऐसे घर में उसे जलती आग में झोंक दिया, वह गीली लकड़ियों के साथ जो न पूरी तरह सुलगती हैं और न ही उसे पूरी तरह जला कर राख करती है, इस अधजली कैफियत से उसे दूर भागना है..... दूर चाहे जैसे भी हो।

निष्कर्ष:-

हम देखते हैं, कि हर घर में, प्रत्येक परिवार में आग लगी है, कहीं बहू जल रही है, सास-ससुर, ननद उसे जला रही है, तिल-तिल कर मरने पर मजबूर कर रहे हैं, तो कहीं बहुएं सास-ससुर को उसी तरह मारने को विवश कर रही हैं.....।

संदर्भ सूची:-

1. जहाँ फव्वारे लहू रोते हैं, नासिरा शर्मा, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.-221
2. सात नदियों का एक समुन्दर, नासिरा शर्मा, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.-7
3. कागज की नाव, नासिरा शर्मा, किताब घर प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृ.-59
4. कागज की नाव, नासिरा शर्मा, किताब घर प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृ.-66

© Copyright @ Authors